श्री गोपाल चालीसा

इन पाठों के बारे में

स्रोत	हर पाठ अपने स्रोत, परम्परा और संस्करण के साथ छपा है। अन्य परम्पराओं और संस्करणों में शब्दों में थोड़ा अन्तर हो सकता है।
लिप्यन्तरण	रोमन पंक्ति देवनागरी से बना IAST लिप्यन्तरण है (ā = दीर्घ आ, ṃ = अनुस्वार, ḥ = विसर्ग, ś/ṣ = श/ष, c = च)। हिन्दी, अवधी और ब्रज पाठों में शब्द के अन्त का मौन 'अ' नहीं लिखा जाता। लिप्यन्तरण में वैदिक स्वर नहीं दिखते।

श्री गोपाल चालीसा

प्रकार	चालीसा
देवता	भगवान श्रीकृष्ण
संस्करण	मिलान किया गया पाठ
परम्परा	वैष्णव
स्रोत	51 चालीसा संग्रह (आरतियों सहित) — रणधीर प्रकाशन, हरिद्वार (2004) — Scan pages 46–50
आभार	पाठ मुद्रित प्रति के स्कैन से लिया गया। सार और अर्थ: उद्योग ज्योतिष सम्पादकीय टीम।
कॉपीराइट	Traditional devotional text in wide circulation. The poet named in the closing verse is a traditional attribution; no mo

श्री राधापद कमल रज, सिर धरि यमुना कूल ।

śrī rādhāpad kamal raj, sir dhari yamunā kūl |

वरणो चालीसा सरस, सकल सुमंगल मूल ॥

varaṇo cālīsā saras, sakal sumaṃgal mūl ||

जय जय पूरण ब्रह्म बिहारी ।

jay jay pūraṇ brahma bihārī |

दुष्ट दलन लीला अवतारी ॥ १ ॥

duṣṭa dalan līlā avatārī || 1 ||

जो कोई तुम्हरी लीला गावै ।

jo koī tumharī līlā gāvai |

बिन श्रम सकल पदारथ पावै ॥ २ ॥

bin śram sakal padārath pāvai || 2 ||

श्री वसुदेव देवकी माता ।

śrī vasudev devakī mātā |

प्रकट भये संग हलधर भ्राता ॥ ३ ॥

prakaṭ bhaye saṃg haladhar bhrātā || 3 ||

मथुरा सों प्रभु गोकुल आये ।

mathurā soṃ prabhu gokul āye |

नन्द भवन में बजत बधाये ॥ ४ ॥

nanda bhavan meṃ bajat badhāye || 4 ||

जो विष देन पूतना आई ।

jo viṣ den pūtanā āī |

सो मुक्ति दै धाम पठाई ॥ ५ ॥

so mukti dai dhām paṭhāī || 5 ||

स्रोत-सहित पारम्परिक पाठ। किसी निश्चित परिणाम का दावा नहीं।

तृणावर्त राक्षस संहार्यौ ।

tṛṇāvarta rākṣas saṃhāryau |

पग बढ़ाय सकटासुर मार्यौ ॥ ६ ॥

pag baṛhāy sakaṭāsur māryau || 6 ||

खेल खेल में माटी खाई ।

khel khel meṃ māṭī khāī |

मुख में सब जग दियो दिखाई ॥ ७ ॥

mukh meṃ sab jag diyo dikhāī || 7 ||

गोपिन घर घर माखन खायो ।

gopin ghar ghar mākhan khāyo |

जसुमति बाल केलि सुख पायो ॥ ८ ॥

jasumati bāl keli sukh pāyo || 8 ||

ऊखल सों निज अंग बँधाई ।

ūkhal soṃ nij aṃg bam□dhāī |

यमलार्जुन जड़ योनि छुड़ाई ॥ ९ ॥

yamalārjun jaṛ yoni chuṛāī || 9 ||

बका असुर की चोंच विदारी ।

bakā asur kī coṃc vidārī |

विकट अघासुर दियो सँहारी ॥ १० ॥

vikaṭ aghāsur diyo sam□hārī || 10 ||

ब्रह्मा बालक वत्स चुराये ।

brahmā bālak vatsa curāye |

मोहन को मोहन हित आये ॥ ११ ॥

mohan ko mohan hit āye || 11 ||

बाल वत्स सब बने मुरारी ।

bāl vatsa sab bane murārī |

ब्रह्मा विनय करी तब भारी ॥ १२ ॥

brahmā vinay karī tab bhārī || 12 ||

काली नाग नाथि भगवाना ।

kālī nāg nāthi bhagavānā |

दावानल को कीन्हों पाना ॥ १३ ॥

dāvānal ko kīnhoṃ pānā || 13 ||

सखन संग खेलत सुख पायो ।

sakhan saṃg khelat sukh pāyo |

श्रीदामा निज कन्ध चढ़ायो ॥ १४ ॥

śrīdāmā nij kandha caṛhāyo || 14 ||

चीर हरन करि सीख सिखाई ।

cīr haran kari sīkh sikhāī |

नख पर गिरवर लियो उठाई ॥ १५ ॥

nakh par giravar liyo uṭhāī || 15 ||

स्रोत-सहित पारम्परिक पाठ। किसी निश्चित परिणाम का दावा नहीं।

दरश यज्ञ पत्निन को दीन्हों ।

daraś yajña patnin ko dīnhoṃ |

राधा प्रेम सुधा सुख लीन्हों ॥ १६ ॥

rādhā prem sudhā sukh līnhoṃ || 16 ||

नन्दहिं वरुण लोक सों लाये ।

nandahiṃ varuṇ lok soṃ lāye |

ग्वालन को निज लोक दिखाये ॥ १७ ॥

gvālan ko nij lok dikhāye || 17 ||

शरद चन्द्र लखि वेणु बजाई ।

śarad candra lakhi veṇu bajāī |

अति सुख दीन्हों रास रचाई ॥ १८ ॥

ati sukh dīnhoṃ rās racāī || 18 ||

अजगर सों पितु चरण छुड़ायो ।

ajagar soṃ pitu caraṇ chuṛāyo |

शंखचूड़ को मूड़ गिरायो ॥ १९ ॥

śaṃkhacūṛ ko mūṛ girāyo || 19 ||

हने अरिष्टा सुर अरु केशी ।

hane ariṣṭā sur aru keśī |

व्योमासुर मार्यो छल वेषी ॥ २० ॥

vyomāsur māryo chal veṣī || 20 ||

व्याकुल ब्रज तजि मथुरा आये ।

vyākul braj taji mathurā āye |

मारि कंस यदुवंश बसाये ॥ २१ ॥

māri kaṃs yaduvaṃś basāye || 21 ||

मात पिता की बन्दि छुड़ाई ।

māt pitā kī bandi chuṛāī |

सान्दीपनि गृह विद्या पाई ॥ २२ ॥

sāndīpani gṛh vidyā pāī || 22 ||

पुनि पठयौ ब्रज ऊधौ ज्ञानी ।

puni paṭhayau braj ūdhau jñānī |

प्रेम देखि सुधि सकल भुलानी ॥ २३ ॥

prem dekhi sudhi sakal bhulānī || 23 ||

कीन्हीं कुबरी सुन्दर नारी ।

kīnhīṃ kubarī sundar nārī |

हरि लाये रुक्मिणि सुकुमारी ॥ २४ ॥

hari lāye rukmiṇi sukumārī || 24 ||

भौमासुर हनि भक्त छुड़ाये ।

bhaumāsur hani bhakta chuṛāye |

सुरन जीति सुरतरु महि लाये ॥ २५ ॥

suran jīti surataru mahi lāye || 25 ||

दन्तवक्र शिशुपाल संहारे ।

dantavakra śiśupāl saṃhāre |

खग मृग नृग अरु बधिक उधारे ॥ २६ ॥

khag mṛg nṛg aru badhik udhāre || 26 ||

दीन सुदामा धनपति कीन्हों ।

dīn sudāmā dhanapati kīnhoṃ |

पारथ रथ सारथि यश लीन्हों ॥ २७ ॥

pārath rath sārathi yaś līnhoṃ || 27 ||

गीता ज्ञान सिखावन हारे ।

gītā jñān sikhāvan hāre |

अर्जुन मोह मिटावन हारे ॥ २८ ॥

arjun moh miṭāvan hāre || 28 ||

केला भक्त बिदुर घर पायो ।

kelā bhakta bidur ghar pāyo |

युद्ध महाभारत रचवायो ॥ २९ ॥

yuddha mahābhārat racavāyo || 29 ||

द्रुपद सुता को चीर बढ़ायो ।

drupad sutā ko cīr baṛhāyo |

गर्भ परीक्षित जरत बचायो ॥ ३० ॥

garbha parīkṣit jarat bacāyo || 30 ||

कच्छ मच्छ वाराह अहीशा ।

kaccha maccha vārāh ahīśā |

बावन कल्की बुद्धि मुनीशा ॥ ३१ ॥

bāvan kalkī buddhi munīśā || 31 ||

ह्वै नृसिंह प्रह्लाद उबार्यो ।

hvai nṛsiṃh prahlād ubāryo |

राम रूप धरि रावण मार्यो ॥ ३२ ॥

rām rūp dhari rāvaṇ māryo || 32 ||

जय मधु कैटभ दैत्य हनैया ।

jay madhu kaiṭabh daitya hanaiyā |

अम्बरीष प्रिय चक्र धरैया ॥ ३३ ॥

ambarīṣ priya cakra dharaiyā || 33 ||

व्याध अजामिल दीन्हें तारी ।

vyādh ajāmil dīnheṃ tārī |

शबरी अरु गणिका सी नारी ॥ ३४ ॥

śabarī aru gaṇikā sī nārī || 34 ||

गरुड़ासन गज फन्द निकन्दन ।

garuṛāsan gaj phanda nikandan |

देहु दरश ध्रुव नयनानन्दन ॥ ३५ ॥

dehu daraś dhruv nayanānandan || 35 ||

स्रोत-सहित पारम्परिक पाठ। किसी निश्चित परिणाम का दावा नहीं।

देहु शुद्ध सन्तन कर सङ्गा ।

dehu śuddha santan kar saṅgā |

बाढ़ै प्रेम भक्ति रस रङ्गा ॥ ३६ ॥

bāṛhai prem bhakti ras raṅgā || 36 ||

देहु दिव्य वृन्दावन बासा ।

dehu divya vṛndāvan bāsā |

छूटै मृग तृष्णा जग आशा ॥ ३७ ॥

chūṭai mṛg tṛṣṇā jag āśā || 37 ||

तुम्हरो ध्यान धरत शिव नारद ।

tumharo dhyān dharat śiv nārad |

शुक सनकादिक ब्रह्म विशारद ॥ ३८ ॥

śuk sanakādik brahma viśārad || 38 ||

जय जय राधारमण कृपाला ।

jay jay rādhāramaṇ kṛpālā |

हरण सकल संकट भ्रम जाला ॥ ३९ ॥

haraṇ sakal saṃkaṭ bhram jālā || 39 ||

बिनसैं बिघन रोग दुःख भारी ।

binasaiṃ bighan rog duḥkh bhārī |

जो सुमरैं जगपति गिरधारी ॥ ४० ॥

jo sumaraiṃ jagapati giradhārī || 40 ||

जो सत बार पढ़ै चालीसा ।

jo sat bār paṛhai cālīsā |

देहि सकल बाँछित फल शीशा ॥ ४१ ॥

dehi sakal bām□chit phal śīśā || 41 ||

गोपाल चालीसा पढ़ै नित, नेम सों चित्त लावई ।

gopāl cālīsā paṛhai nit, nem soṃ citta lāvaī |

सो दिव्य तन धरि अन्त महँ, गोलोक धाम सिधावई ॥

so divya tan dhari anta maham□, golok dhām sidhāvaī ||

संसार सुख सम्पत्ति सकल, जो भक्तजन सन महँ चहैं ।

saṃsār sukh sampatti sakal, jo bhaktajan san maham□ cahaiṃ |

जयरामदेव सदैव सो, गुरुदेव दाया सों लहैं ॥

jayarāmadev sadaiv so, gurudev dāyā soṃ lahaiṃ ||

प्रणत पाल अशरण शरण, करुणा सिन्धु ब्रजेश ।

praṇat pāl aśaraṇ śaraṇ, karuṇā sindhu brajeś |

चालीसा के संग मोहि, अपनावहु प्राणेश ॥

cālīsā ke saṃg mohi, apanāvahu prāṇeś ||

अर्थ

चालीसा श्रीकृष्ण के वसुदेव-देवकी के घर जन्म से गोकुल की लीलाओं — पूतना, तृणावर्त, माखन चोरी, कालिय, गोवर्धन, रास — होते हुए मथुरा, कंस-वध, द्वारका, सुदामा, गीता, महाभारत और उनके अवतारों तक चलती है। वह सन्तों का संग और वृन्दावन वास माँगती है, और अन्त में कवि जयरामदेव का नाम है।

स्रोत-सहित पारम्परिक पाठ। किसी निश्चित परिणाम का दावा नहीं।

इस दस्तावेज़ के बारे में

इस दस्तावेज़ के पाठ सार्वजनिक (पब्लिक डोमेन) पारम्परिक भक्ति पाठ हैं या हमारी टीम द्वारा लिखे गए हैं, और अपने दर्ज स्रोत व संस्करण के साथ छपे हैं।

अर्थ हमारे शब्दों में संक्षिप्त व्याख्याएँ हैं, विद्वत्तापूर्ण अनुवाद नहीं। किसी पाठ के अपने श्लोकों में बताए लाभ पाठ का अंश हैं, गारण्टी नहीं।

कुछ साधनाएँ परम्परा से गुरु-मार्गदर्शन में की जाती हैं। अपनी परम्परा के मार्गदर्शन का पालन करें।